CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नित्य कर्म श्री कृष्ण गीता

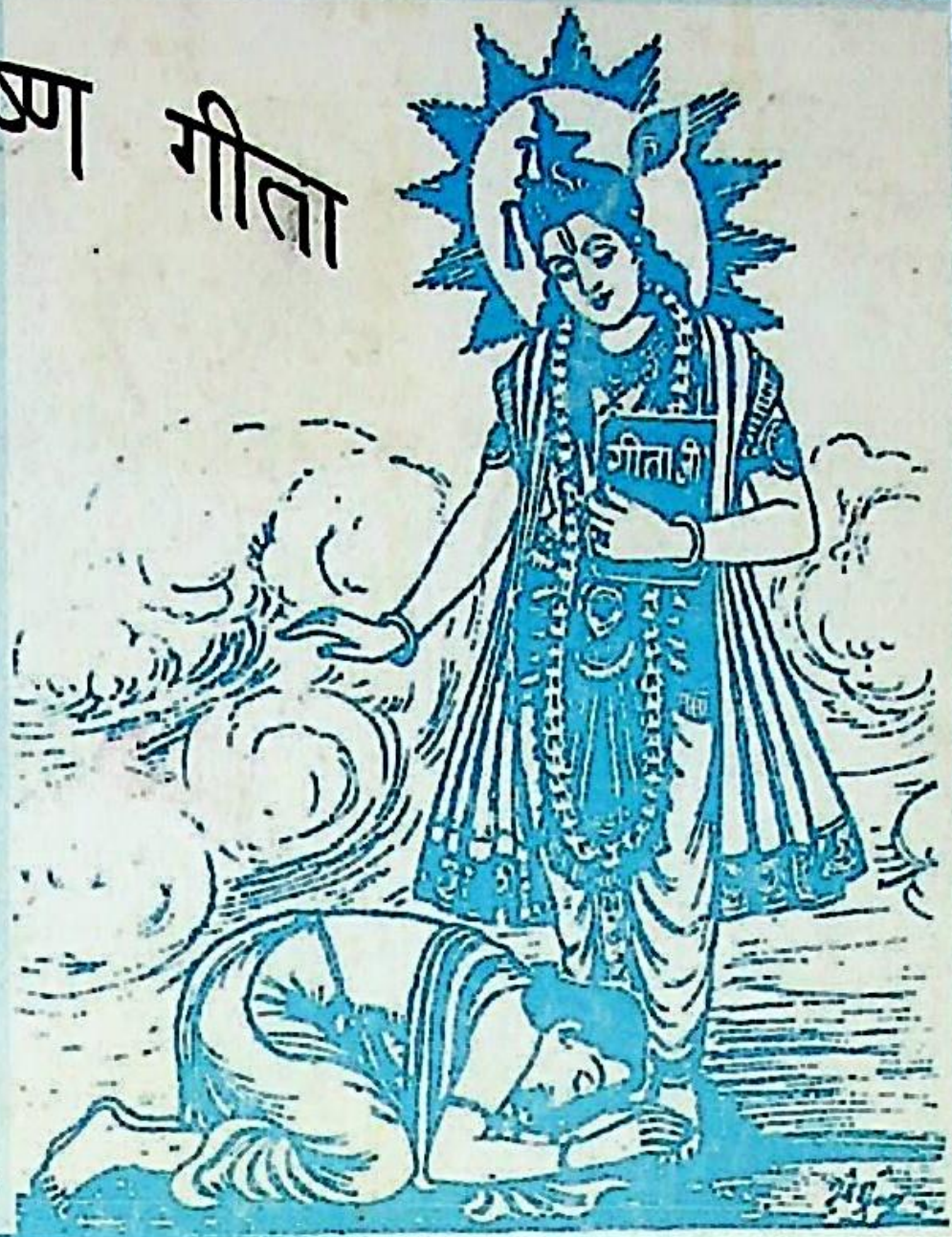

श्री कृष्ण गीता बर्तज जय जी
कृत कवि लाल चन्द पुरी जी
सिरी भगवान शर्मा जी द्वारा हिन्दी रूपांतर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"जन्म जन्मान्तर के पाप दूर करने और कुल जग के जीवों के सर्व दुःखों को हरने वाली दरे - नायाब (दर-ए-नायाब) रूहानी किताब"

SCANNED SANSKRIT DIGITAL

श्री कृष्ण- चरित्र नाटक

भाई तीर्थ राम छब्बर

श्री मद्भगवद् बतर्ज संगीत जिसके सरवरक पर भगवान श्री कृष्ण चन्द्र जी महाराज की श्री मूरत रंगीन तस्वीर ।

SCANNED SANSKRIT

श्री कृष्ण गीता बतर्ज जय जी

कृत कवि लाल चन्द पुरी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नित कर्म कृष्ण गीता

श्री गणेशाय नमः

ओ३म् परमेश्वर जगत के दाता। तू ही पिता तू ही माता।।
तुझ बिन रक्षक और न कोए। लाज भक्तन की राखे जोए।।
रोम रोम में तू ही विराजा। राखो लाज गरीब नवाज़ा।।
भगवतगीता वेद समान। युद्ध में कथन कही भगवान।।
गीता भक्त जो पढ़े पढ़ावे। आखे कृष्ण बेकुंठी जावे।।
प्रातःकाल जो पाठ उचारे । सोई भक्तन जी लागन प्यारे।।
लाल कुंती दे सुनि सी गीता। युद्ध में पाठ भगवान ने कीता।।
सुन लो गीता हो निर्भय। मुख से बोल कृष्ण की जय।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पहला अध्याय

भगवद् गीता पहला अध्याय, युद्ध कारण दो लश्कर आये।
इक दल भीष्म फौज ले आया। दूजी तरफ भीम जो आया।।
चढ के कतक मैदाने आये। नाले घडले शंख बजाए।।
अर्जुन कहया मेरे भगवान। रथ लै चलो विच मैदान।।
मुकटाँ वाले रथ चलाया । रण भूमि विच आण खल्लाया।।
ठीक विचाले रथ लिआए । सेना तक अर्जुन घबराए।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

थर-थर कांपत होश बिसारी । कुदरत भगवन देखी न्यारी।।
अर्जुन कहे सुनो भगवान। मेरे हथ न ठहरे बाण ।।
जो यौद्धे विच रण दे आए। इक भी वीर न डिठा जाए।।
बन्धु भाई कुटुम्ब कबीले। मारा किस पर बाण जहरीले ।।
बूढे दादा गुरू जी नाले । मामू, बेटे, भाई, साले।।
आखां की मैं कृष्ण मुरारी। इक्को घर इक्को फुलवारी।।
जितने योद्धे राज दुलारे। इक माला दे मणके सारे।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैथों युद्ध न कीता जावे। धनुष बाण न हथ विच आवे।।
उलटे शगुन एह दिस्ण सारे। जदों कुटुम्ब दे हथिं मारे।।
रण विच जद ना छढ़या कोई। राजनीति दस काहदी होई।।
मन कांपत जे होई दिलगीरी। राज ना चंगा करां फकीरी।।
हथों इक ना बाण चलावां। जोग चंगा ना राज कमावां।।
जे त्रिलोकी राज हो जावै। फेर भी एह ना बाण चलावै।।
मुकुट वाले सुन कृष्ण मुरारी। अपणे हृदय बात बिचारी।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जद अधर्म ने अडिंगा लाया। चंचल नारी ताईं घबराया।।
अग्गे आण धर्म खलोवे। वर्ण शंकर फिर पैदा होवे।।
वर्ण शंकर दी सुण बुरयाई। आल औलाद सब नर्क पहुंचाई।।
करो खिमा मेरे कृष्ण मुरारी। युद्ध दी 'लाल' ना करे तैयारी।।

!! जय श्री कृष्ण !!

दूसरा अध्याय

भगवतगीता दूजा अध्याय । श्री कृष्ण जी आप फरमाए ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुण कुन्ती दे वीर दुलारे । उलटे मन में अर्थ विचारे ।।
झुठा मोह संसारी धन्धा । सुण अर्जुन सब जगती धन्धा ।।
कैसी मन में बात विचारी । धनुष बाण हथ फड़ करो तैयारी ।।
अर्जुन वीर ना हिम्मत हारो । कृष्ण बोले एह बात विचारो ।।
जीवे कोई कोई मर जावे । ज्ञानी ज्ञान छड़ न घबरावे ।।
जेहड़ा जम्या सो मर जावे । जन्म धार के मुड़ मुड़ आवे ।।
खाकी पुतला रूह छड़ जावे । जन्म जन्म विच भेष वटावे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रूह न मरदा मारे कोई । केहड़ी गल्ल दी चिन्ता होई ।।
रूह दी महिमा अपरम्पार । काट न साके कोई हथियार ।।
अग्ग ना साढ़े तेग न मारे । रूह जा पंहुचे असल द्वारे ।।
रूह हमेशा रहने वाला । इक जगह नहीं भैणे वाला ।।
पिंजरा छोड़ जद पंछी भागे । पुतला सुत्ता मुड़ न जागे ।।
कहण कृष्ण सुण वीर दुलारे । छड़ ख्याल निकम्मे सारे ।।
क्षत्री असल जो वीर प्यारे । युद्ध वल्लों वो कदे ना हारे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्षत्री मारे सन्मुख होके । कदी ना आवण युद्ध तों रोके ।।
क्षत्री लई एक शस्त्र गहणा । अर्जुन मानो मेरा कहणा ।।
मन इक बात विचार पयारे । सुण उड़ासन हंसी सारे ।।
कित्ते कर्म सों आवण आग्गे । बीज बीज्जे सो बूटा बाडे ।।
खुदगर्जी दा छड़ बहाना । इक वल मन दा करो ठिकाणा ।।
तीन गुण से वेद भरपूर । सत्तो गुण दा दस्सां नूर ।।
सत्तो गुण विच रहने वाला । सुख दुःख सारे सहणे वाला ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बन जा क्षत्री वीर दुलारे । जात आपणी दे रहो सहारे ।।
करम करणा ए हथ विच तेरे । मुक्ति देणा ए हथ विच मेरे ।।
फल मिलण दा ख्याल त्यागो । निन्द्रा विच्चो अर्जुन जागो ।।
करम करे ते फल ना मंगे । भक्त पिआरा चंगा लागे ।।
खुद मैं विच्च बैकुण्ठ पहुचांवा । अपणै हृदय नाल मिलावां ।।
अक्ल वाला सो समझो बंदा । जो तृष्णा दा छोडे धन्धा ।।
जेहडा मन तो क्रोध त्यागे । सो वो भगत पयारा लागे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुण कुन्ती दे वीर दुलारे । इन्द्रियां दे सब खेल नियारे ।।
विषयां दे वल खिंच ले जावण। नरकां दा भागी तुरन्त बणावण ।।
मोह माया दे फन्दे डालण । 'लाल' जी नरक कुठारी गालण ।।

!! जय श्री कृष्ण !!

तीसरा अध्याय

भगवद् गीता तीजा अध्याय । पहले अर्जुन शीश झुकाए ।।
अर्ज इक मेरी सुणो मुरारी । बात इक हृदय होर विचारी ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करम कृष्णा तू हेठ बताया । दर्जा बुद्धि उच्च दिखाया ।।
विच्च भरम ना बुद्धि पाना । रस्ता सुथरा साफ दिखाना ।।
दस्सों सो जो हो भलाई । काहनूं छेड़ां मुफ्त लडाई ।।
कृष्ण चन्द्र जी आप फरमांदे । अर्जुन नूं एह बचन सुणान्दे ।।
बाज करम दे कोई ना खाली । हालत एह दी अजब निराली ।।
करम काण्ड जो छोडे बंदा । खाली मन दा पावे धन्धा ।।
धोखेबाज मक्कार औ जान । ओहदा कदे ना हो कल्याण ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पैदा कित्ते मनुष पिआरे । ब्रह्म ने एह बचन उच्चारे ।।
एह जरया जग दा जाण । बन्दे तेरा करां कल्याण ।।
खुश देवता करणा प्यारे । कारज करसी आप ओ सारे ।।
ओ तेरा तू बण जा ओहदा । तां मैं जाणा क्षत्री योद्धा ।।
जिन्नै धांदी बैठ तन्हाई । ओसने पदवी चोर दी पाई ।।
अन्न से पैदा होने वाले । वृक्ष अन्न दा बदल पाले ।।
यज्ञ करो ते बद्दल पैंदे । करम कित्यां यज्ञ ने होंदे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर्म प्रकृति विचों पैदा । प्रकृति ते ईश्वर सैदा ।।
तीन लोक में अर्जुन जाण । मेरे न कोई होर समान ।।
फिर भी कर्म न छड़दा वीर । कित्ता धारण मनुष शरीर ।।
कर्मों वाज न कारज होवे । विच्च मुसीबत कर्म खलोवे ।।
अपणे आप ते कर पहचान । बुद्धि मन से परे तो जान ।।
'लाल' व्याकुल होण ना वीर । धनुष बाण फड़ हथ शमशीर।।

!! जय श्री कृष्ण !!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौथा अध्याय

भगवद् गीता चौथा अध्याय । श्री कृष्ण जी एह फरमाए ।।

अर्जुन तैनू मित्र जाण । करम योग दा करां ज्ञान ।।

अग्गो दोसां तांइ सुनाया । मनु पुत्र नूं आदेश सुनाया ।।

अपणे पुत्र इक्ष्वाकु जोग । मन्नु सुनाया करम सो योग ।।

अर्जुन बोले हो हैरान । करां बेनती इक भगवान ।।

जिन्हा नूं तू योग सुनाया । विच्च संसार ओ पहले आया ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होई मुदत जद ओह परिवार । कृष्णा हुण तु लिया अवतार ।।
किक्कणं मंना कृष्ण भगवान । ओन्ना दित्ता दूध ज्ञान ।।
कहा अर्जुन नू मुकटां वाले । दस्सां अर्जुन सुन मतवाले ।।
जन्म होए कई तेरे मेरे । कई कई इत्थे कित्ते फेरे ।।
जदों धर्म दी हो ग्ल्यानी । दस्सां अपणी शक्ल नूराणी ।।
नेक मनुष दी करां मैं रक्षा । धर्म करम दी देवां मैं शिक्षा ।।
पापी कपटी मार मुकांवा । पापी मिटांवण मुड़ मुड़ आंवा ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एह करम जो मेरे जाणे । आसन उस बैकुंठी लाणे ।।

जैसा जैसा करम करीदां । तैसा तैसा फल मैं देंदा ।।

जिसने कीती नेक कमाई । रूह ओहदी मैं नाल मंगाई ।।

अज्ञान अर्जुन तू दिलों मिटाके । चल मैदान तलवार उठा के ।।

!! जय श्री कृष्ण !!

पांचवा अध्याय

भगवद्गीता पांचवां अध्याय । श्री कृष्ण जी एह फरमाए ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करम संन्यास तु उत्तम जान । करम योग भी इस समान ।।
दोनों सृष्टि विच बलवान । ये भक्तन का करें कल्याण ।।
करम कोलों कुछ योग बढ़ेरा । योगवान भगत है मेरा ।।
करम बिना ना होन्दा योग । जनम जनम पया जून्नां भोग ।।
माया उपर भरमे जेडे । लालच वाले पाए बखेड़े ।।
ज्ञानवान ना जान अंधेरे । सच्चे भक्तन प्रेमी मेरे ।।
ज्ञानवान ना पाप कमांदे । पहले कीत्ते धोन्धे जांदे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मै ही चारों वर्ण बनाए । वक्खों वखरे कर्म बताए ।।

कर्म अकर्म दी करे पछाण । अर्जुन मेरा भक्त सो जान ।।

करें हवन ते ब्रह्म ध्याना । उस भक्त में ब्रह्म ही पाना ।।

कर्मकाण्ड विच होवे पूरा । तप अन्दर न रहे अधूरा ।।

ब्रह्म दे नाल ओह मिलदा जाके । भक्ति मुक्ति अर्जुन पाके।।

जग कोलों ज्ञान चंगेरा । पापां वल ना पावे फेरा ।।

कर्म ज्ञान सब पाप मिटावे । ज्ञान भक्ति सब भक्त बनावे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ज्ञान होवे ते सुत्ते जागण । आलस वाली निन्द्र त्यागण ।।
कर्मकाण्ड ते योग अभिलाषी । कर्मयोगी तां जान सन्यासी ।।
आसां दा ना करे त्याग । योग ना मिलदा फुटें भाग ।।
अपणा सज्जन आपे जाण । दुश्मन अपना आप पछाण ।।
जिन्हा जित्या अपना आप । छूट जान्दे फिर सारे पाप ।।
सोना मिट्टी इक कर जाता । ओहणे पूरण ब्रह्म पछाता ।।
सब वस्तु इको जाणे । ओह ब्रह्म दा रूप पछावे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर्मयोगी विच बैठ तन्हाई । मेरी हरदम करै वडयाई ।।

जाणां वाले इक्को जाण । सबदे अन्दर ब्रह्म पछाण ।।

जो ना विषयां दे वल जादें। ओह अर्जुन सो मुक्ति पांदे ।।

ओम ईश्वर जिस इक कर जाता । ओसे मेरा रूप पछाता ।।

काम क्रोध से पाए आजादी । कदें ना ओहंदी करां बरबादी ।।

जेड़ा मेरे द्वार खलोवे । शान्ति लाल प्राप्त होवे ।।

!! जय श्री कृष्ण !!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छठा अध्याय

भगवद्गीता छठा अध्याय । फेर कृष्ण जी एह फरमाए ।।
योगाभ्यास विच चित्त लगावे । कर्मयोगी सो 'लाल' कहलावे ।।
बोहता खावे बोहता सोवे । योगाभ्यास ना उसतों होवे ।।
श्रेष्ठ पुरूष सो भगत कहावे । हृदय जिसदे पाप न आवे ।।
नाल ज्ञान दे बण खिलारे । काम क्रोध नूं पहले मारे ।।
मन मेरी ना बन भिखारी । आत्मा दी कर ताबेदारी ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैनूं सब विच जेहडा जाणे । सब नू मेरे विच पछाणे ।।
करम तों कदी ना रहण अधूरे । असल भक्त जे प्रेमी पूरे ।।
मन चंचल अते मन नू अर्जुन । भक्तजन ऐनू क्यों न वर्जन ।।
पापां नू मन खिच ले जावे । धर्म करम नू मुश्किल आवे ।।
अभ्यास वैराग चा काबू करदा। मानव मुरख भी कदी दा मरदा।।
नेकां कीत्ती नेक कमाई । ओहदी न कोई करे बुराई ।।
जा बैकुण्ठी डेरा लावे । ऐश नाल कई काल लंघावे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

घर पवित्र जनम आधारे । दुःख भक्तन के काटू सारे ।।
कर्मयोगी बण अर्जुन वीर । मन काबू कर पकड़ो धीर ।।

!! जय श्री कृष्ण !!

सातवां अध्याय

भगवद्गीता सातवां अध्याय । कृष्ण अर्जुन को वचन सुनाए ।।
कर्म योग दा करो अभ्यास । पापों का हो सत्यानाश ।।
ज्ञान कारण मैं बचन उचारू । अर्जुन सीधे रस्ते डालूं ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल । आकाश मिलाया पांच अटल ।।
मन, बुद्धि, अंहकार ये तीन । प्रकृति के सब अधीन ।।
इक प्रकृति हौर बतावां । उच्च पदवी के जीव दिखावां ।।
वो प्रकृति सुण निर्भय । जीव जो बोले कृष्ण की जय ।।
तब पापों से हो छुटकारा । भक्त जगत का खेल न्यारा ।।
चाँद सुरज सब वेद पुराण । मेरी महिमा सारी जाण ।।
मर्दां दी मर्दानगी अन्दर । रोम रोम में डारा मन्दिर ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निराकार भी समझ मुरारी । साकार भी गिरवर धारी ।।
मेरा हरजा देख पसारा । मैथों कोई ना भगत न्यारा ।।
सब जगत ऐह मेरी माया । हर वस्तु में आसण लाया ।।
अग्नि, जल, आकाश ते धरती । जांण मेरी एक सब प्रकृति ।।
मैं ही करता मैं ही भरता । भक्तजन के सब पाप मैं हरता ।।
बिन भक्त जो चरणी आए । इक मनुष न नरकी जाए ।।
लोभ कारण जो भक्त धियान्दे । हरगिज ओह ना मुक्ति पांदे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिनके हृदय ज्ञान घनेरा । ओह दर मेरे पावण फेरा ।।
पूर्ण भक्ति विच हो जांदे । मैनूँ अपणे कोल बुलान्दे ।।
भक्तां दा मैं खिचया जांवा । भगत मैं हृदय नाल लगावां ।।
आदि, अन्त और मध्य में जाण । मेरे ना कोई होर समाण ।।
जानदार जो पैदा होये । मेरी माला विच परोए ।।
मनुष जन्म दा मिलना औखा। 'लाल' कम्म ना है कोई सौखा।।

!! जय श्री कृष्ण !!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आठवां अध्याय

भगवद्गीता आठवां अध्याय । श्री कृष्ण जी फिर फरमाए ।।
इक्को अटल ब्रहम नू जाण । जेहड़ा मिटे ना विच जहाण ।।
दुनिया वाले कार व्यवहार । करम दा है एह सब परिवार ।।
आदि देव तूँ मेरी मान । सब युगों का मालिक जाण ।।
अन्त समय जो सुमिरे मैनूँ । देवां मुक्ति दस्सां तैन्नू ।।
ख्याल जेड़े विच मरदा बन्दा । नाल हमेशा जांदा धन्धा ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इन्द्रियां जो सब बन्द करावे । प्राण मस्तक दे विच ले जावे ।।
जाप करे ते प्राण त्यागे । बैठा बैठा फिर ना जागे ।।
असल बैरागी उस नू जाण । कहण कृष्ण मैं करां कल्याण ।।
स्वर्ग लोक में कुन्ती वीर । छड़ भक्त जो जाए शरीर ।।
देही धारण ना करदा आए । जेहड़ा मिलदा मैनूँ जाए ।।
मरण-जन्म तों रहत हो जावे । वीर अर्जुन औ मुक्ति पावे ।।
योगी मोह दे विच न आवे । मोह माया नू पया दरकावे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करम योगी तू बन जा वीर । मिट्टी मिल सी 'लाल' शरीर ।।

!! जय श्री कृष्ण !!

नौंवा अध्याय

भगवद्गीता नौवां अध्याय । श्री कृष्ण जी एह फरमाए ।।

अन्त मेरा ना किसे पाया । सर्व जगत मैं आप फैलाया ।।

जग सरदत में अर्जुन प्यारे । रमा तन जग जान दुलारे ।।

श्राद्ध पितर में मैन्नूँ जाण । सूरज, अनाज, कथा में मान ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हवन, आहुति में भी हाजिर । हरजा मैनूँ समझो नाजर ।।
सब नूँ पैदा करने वाला । वेद चारों में रहने वाला ।।
परम सरूप न मनदे जेहड़े । मूर्ख लोकां पाए बखेड़े ।।
मैनू पदवी देण इन्सानी । करम उन्हा दे कुल शैतानी ।।
ज्ञान उन्हा दे धोखे बाजी । नेक पुरूष ना कोई भी राजी ।।
जेहड़े मस्त प्रेम रंगीले । प्रेमी लगण भक्त रसीले ।।
जो श्रद्धालु श्रदा करदा । नाम मेरे दा जो भी भरदा ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ओहदी भेटां करां कबूल । मेरा पहला असल असूल ।।
भक्ति दा कर जोर बुलावे । एह कृष्ण फिर नट्ठा आवे ।।
भक्तोत्सल मैं नाम धराया । तुर भक्तां दे कोल मैं आया ।।
मेरी देर ना मासा जाण । बुलाण वाला तू कर सामाण ।।
'लाल' कहे तेरी कुदरत न्यारी । बक्श मैनूँ तू गिरवरधारी ।।

!! जय श्री कृष्ण !!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दसवां अध्याय

भगवद्गीता दसवां अध्याय । श्री कृष्ण जी यूं फरमाए ।।
बुद्धि, ज्ञान, बेखौफी, सुख । सबर, मौत, जबत मोह दुख ।।
तप, दान, बुद्धि, बदनामी । दरिंद, परिंद, चरिंद, मोह नामी ।।
गरज की हरजा मैनूँ जाण । मिलया रूप ते रूप पछाण ।।
प्रकट जेहड़ा करे सच्चाई । कर्मयोग दी पदवी पाई ।।
सिमरण मैनूँ बुद्धिमान । तिन भक्तजन का करूं कल्याण ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वेद, चन्द्रमा, सूरज, तारे । हरजा मेरे खेल नियारे ।।
इक ओंकार जिस मैनू जाता । उसे मेरा रूप पछाता ।।
साकार मैं ज्योति सरूप । 'लाल' भक्तन नू दस्सां रूप ।।

!! जय श्री कृष्ण !!

ग्यारहवां अध्याय

भगवद्गीता ग्यारहवां अध्याय । कुन्ती बेटा शीश झुकाए ।।
कृष्ण मुरारी भ्रम मिटायो । लासानी अज रूप दिखायो ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्जुन ने जद एह फरमाया । श्री कृष्ण जी रूप वटाया ।।
सूरत अजब ते रंग अनेक । अर्जुन दिता मस्तक टेक ।।
जो इच्छा सो पूरण कर ले । कहया कृष्ण जी चित नू भरले ।।
अर्जुन देख रूप घबराया । मुख से बोल एह बचन सुनाया ।।
तेरी महिमा अपरम्पार । डिट्ठी मेरे कृष्ण मुरार ।।
ऋषि मुनि सब विच बिराजे । निर्धन योद्धे भक्त महाराजे ।।
तेरी महिमा कही ना जाए । अजब भक्त को रूप दिखाए ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है भी सच और सच कर जाता। कृष्ण तेरा अज रूप पछाता ।।
नमस्कार मेरी जगत के दाता । नमस्कार मेरी भक्त त्राता ।।
नमस्कार मेरी कृष्ण मुरारी । नमस्कार मेरी गिरिवरधारी ।।
नमस्कार मेरी मुकटां वाले । नमस्कार मोहे राखन वाले ।।
नमस्कार कहे 'लाल' कृष्णा । कदों मिटेगी मेरी तृष्णा ।।

!! जय श्री कृष्ण !!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बारहवां अध्याय

भगवद्गीता बारहवां अध्याय । कृष्ण अर्जुन नूं एह सुणाय ।।
अभ्यास कोलों जो ज्ञान चंगेरा । ज्ञान कोलों है ध्यान उचेरा ।।
कर्मफल दा बंद त्याग । प्राप्त शांति कर दे भाग ।।
जो ना नफरत करे इन्सान । सभी जाणे एक समान ।।
नाले रहम दिल तें होवे । अहंकार खुदी नू छड़ खलोवे ।।
सोई बन्दा उतम जाण । मैं ओहदा ओह मेरा जाण ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काया को जो ना दे कलेश । मेरा जाणो ओह दरवेश ।।
माने जो ना मनुष आनन्द । नफरत नू नां करे पसंद ।।
सर्दी, गर्मी, इज्जत, सुख । समझे इक समान मनुख ।।
कोई मरे ना गम रचाए । जन्म धारे ना खुशी मनाए ।।
सुण कुन्ती दे राजदुलारे । 'लाल' भक्त सो लागन प्यारे ।।

!! जय श्री कृष्ण !!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तेरहवां अध्याय

भगवद्गीता तेरहवां अध्याय । ब्रहमकथा श्री कृष्ण सुनाए ।।
अटल ब्रह्म जे विच संसार । मोक्ष मिले जे करे प्यार ।।
चार कूट विच हथ फैलाए । रोम रोम विच ब्रह्म समाए ।।
हरजा ब्रह्म व्यापक जाण । झलक गुणां दी ब्रह्म में जाण ।।
अन्दर ओहदे होर ना कोए । परन्तु सब नूँ पाले सोए ।।
असल ते निर्गुण ओह नूँ योग । ब्रह्म गुणां दा करदा भोग ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संसार अन्दर जो जाणा वाले । अर्जुन सब नू ब्रह्म ही पाले ।।
है ते दूर व्यापक नेड़े । मूर्ख समझे होर बखेड़े ।।
मारे राखे ब्रह्म ही आप । ओह ही बुढापा ओह ही ताप ।।
जीव अनादि ब्रह्म अनादि । जिस दी कदी ना हो बरबादी ।।
परमपिता नू व्यापक जाणे । राखे बुद्धि इक टिकाणे ।।
अपणा आप न करे तबाह । नेकी वाला पकड़े राह ।।
ओहदे ना कोई होर समान । 'लाल' भला हो विच जहान ।।

!! जय श्री कृष्ण !!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौदहवां अध्याय

भगवद्गीता चौदहवां अध्याय । कृष्ण चन्द्र जी यू फरमाएं ।।
सुन अर्जुन तू वीर दुलारे । चित साफ कर तू प्यारे ।।
सत्तो गुण दे खेल न्यारे । प्रेम नाल जिंस बांधे सारे ।।
रज्जो गुण अन्दर प्रीति जाण । प्रीत फैलावे कुल जहाण ।।
तमो गुण डारे मोह दे मन्दिर। गफलत काहली हर हर अन्दर ।।
रत्न गुण दी करे पिछाण । रूप मेरे नाल ओहनू जाण ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तीन गुणां तो जो लंघ जावे । भक्ति मुक्ति भक्त ओ पावे ।।
जन्म मरण तों हो छुटकारा । समझ मेरा ए खेल न्यारा ।।
मनुष जेहड़ा हो बुद्धिमान । सब कुछ जावे आप पिछाण ।।
मेरी महिमा अपरम्पार । जिस नू मन्ने कुल संसार ।।
पापों से हो जाए छुटकारा । 'लाल' मेरा जिस नाम चुतारा ।।

!! जय श्री कृष्ण !!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पन्द्रहवां अध्याय

भगवद्गीता पन्द्रहवां अध्याय । वीर अर्जुन नूँ कृष्ण बताय ।।
सुण लै अर्जुन कर के ध्यान । इक वृक्ष लाफानी जाण ।।
कदी नाश नहीं होने वाला । नित नित नहीं होने वाला ।।
इस दे पत्ते वेद ने चारे । ब्रहमा जी ने मुखों उचारे ।।
कई डालियां होर भी जाण । तिन गुण से परवरिश पाण ।
इस वृक्ष नूँ केहड़ा जाणे । एहदा ना कोई रूप पिछाणे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मोह माया ते गरूर त्यागे । भाग अर्जुन जी ओहदे जागे ।।
इस वृक्ष नूँ केहड़ा जाणे । सुण कुन्ती दे लाल सयाणे ।।
इस रमज नूँ जेहड़ा पावे । आसन विच बैकुण्ठ दे लावे ।।
कृष्ण ही वेद बनाने वाला । सृष्टि कृष्ण रचाने वाला ।।
वेद विच जो नाम पुरूषोतम । कृष्ण प्यारा समझ परोतम ।।
नाम कृष्ण दा जो मतवाला । वेदां दा ओ मन्नण वाला ।।
मोह माया दा छड गरूर । कृष्ण 'लाल' दा देखो नूर ।।

!! जय श्री कृष्ण !!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सोलहवां अध्याय

भगवद्गीता सोलहवां अध्याय । कृष्ण भगवान जी ए फरमाए ।।
अर्जुन वीर सुनो कर ध्यान । वेद शास्त्र सब इक समान ।।
कर्म मनुष नू चाहिए करणा । जो नहीं जमणा ना मुड़ मरणा ।।
ना जीवां नू क्लेश पहुंचाणा । मोह माया दे वल ना जाणा ।।
नाले दिल ते क्रोध ना लावे । करम धरम सब नेक कमावे ।।
काम क्रोध ये जहरी नाग । करम फल दा कर ना त्याग ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तंग दिली नू दिल विचों कढ़ । बुरे कर्म ने जितने छड़ ।।
चंचल अर्जुन कदे ना होणा । तक्क मुसीबत कदे ना रोणा ।।
कर्म धर्म सब उतम जाणे । सतयुगी ओ समझ सयाणे ।।
काम, क्रोध ते लोभी बाजे । दोज़ख दे ने तिन दरवाजे ।।
तीनों नाश साड़ा कर डालण । नेक पुरूष सब बात विचारण ।।
तीनों ए जिस काबू कर डाले । 'लाल' भक्त सो लागण प्यारे ।।

!! जय श्री कृष्ण !!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सतारवां अध्याय

भगवद्गीता सतारवां अध्याय । कृष्ण देव जी यूं फरमाए ।।
जैसी श्रृद्धा मन में ठाणें । तैसी फल श्रद्धालु पाणे ।।
यज्ञ तप ए पार्थ दान । सब जीवां दा करे कल्याण ।।
सृष्टि के जद खेल रचाए । ब्रहमा ने वेद ते यज्ञ बणाए ।।
यज्ञ दान ते तप जिस कीता। परम पिता नूं उस लभ लीता।।
तप जप छड़ लालच किता । सत छड़ असत फड़ लीता ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सत नही ओ असत कहलावे । तीन लोक नां लाभ उठावे ।।
लैयां जिन्हा ने नेक सलांवां । हृदय अपणे नाल मिलांवा ।।
'लाल' दरवाजा ढूंढे मेरा । तू मेरा मैं सज्जन तेरा ।।

!! जय श्री कृष्ण !!

अठारहवां अध्याय

भगवद्गीता अठारहवां अध्याय । श्री कृष्ण जी यूं फरमाए ।।
नेक पुरूष सुन ओ कहलांवे । रूप मेरे विच जो मिल जावे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गरज ना आवे जिसदे पास । ओहनूं ज्ञानी कहण सन्यास ।।
करम फल ना मंगण वाले । धरम करम दे हो मतवाले ।।
रख दे हथ विच मन दी वाग । पंडत ओह नू कहन त्याग ।।
छोडण करम जो खोफ दे मारे । रूप मेरे थीं रहण न्यारे ।।
इक जगह जो मैनू जाणे । ओह ना मेरे रूप पछाणे ।।
माया दा जो करे अहंकार । ओहदा कदे ना करां उद्धार ।।
माया दे ने सारे धन्धें । भागी नरक बण जावण बंदे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्जुन आखर करां ज्ञान । आपणा जे तू चाहे कल्याण ।।
तरफ मेरी तू मन नूँ ला । पूर्ण भगत मेरा बण जा ।।
छड़ के अर्जन धर्म तू सारे । चित लगा ले इधर प्यारे ।।
मेरी शरण में आ जा आ जा । अर्जुन अपने पाप मिटा जा।।
लाभदायक मैं दस्सी गल । विसारी ना तू एक भी पल ।।
अपणे रूप दे नाल मिलावां । अन्त अपणा नहीं भजन सुणांवा ।।
तप नहीं कर दे जप जी जेड़े । बैठे धरम नूँ समझ बखेड़े ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ओहना ए ना राज बताणा । 'लाल चन्द' गुण मेरे गाणा ।।

!! जय श्री कृष्ण !!

नमस्कार

नमस्कार मेरी कृष्ण मुरारी । नमस्कार मेरी अवध बिहारी ।।
नमस्कार मेरी जग के दाता । नमस्कार मेरी गंगा माता ।।
नमस्कार मेरी श्याम पिआरे । नमस्कार मेरी बक्सणहारे ।।
नमस्कार मेरी गिरिवर धारी । नमस्कार मेरी बांके बिहारी ।।
नमस्कार मेरी मुकटां वाले । नमस्कार मेरी पालनहारे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमस्कार जिस गज छुड़ाया । नमस्कार जिस चीर बढ़ाया ।।
नमस्कार मेरी सीता राम । नमस्कार मेरी चारो धाम ।।
नमस्कार मेरी लक्ष्मी माता । नमस्कार मेरी लक्ष्मण भ्राता ।।
नमस्कार मेरी बीर बजरंगी । नमस्कार मेरी राम के संगी ।।
नमस्कार मेरी ओडे चारे । नमस्कार मेरी तीर्थ सारे ।।
नमस्कार मेरी चारो खाने । नमस्कार मेरी चारों बाणी ।।
नमस्कार मेरी लाल स्वामी । नमस्कार मेरी अन्तर्यामी ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नमस्कार मेरी वेद जी चारे । नमस्कार मेरी ब्रहमा प्यारे ।।

नमस्कार मेरी भगवद्गीता । नमस्कार मेरी माता सीता ।।

नमस्कार मेरी दशरथ बेटा । नमस्कार मेरी घट घट लेटा ।।

नमस्कार मेरी भोले नाथ । नमस्कार मेरी कर्म जो साथ ।।

नमस्कार मेरी गुरू जी प्यारे । नमस्कार मेरी बन्धु जी सारे ।।

नमस्कार मेरी पिता और माता । नमस्कार मेरी 'लाल' के दाता।।

!! जय श्री कृष्ण !!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परमपिता श्री रघुनाथ जी से प्रार्थना

पूरण ब्रह्म रघुनाथ स्वामी - जग के दाता अर्न्तयामी।

भक्त रक्षक तू राम कहलावें - ऋषि मुनि जस तेरा गावें।

महिमा तेरी कहि न जाये - शरण आये सो मुक्ति पाये।

राक्षस दिंदे दुःख जदभारा - ऋषियों ने तब राम पुकारा।

ढील न कीती तू रघुराई - चतुर्भुजी आ शकल दिखाई।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पापी कपटी मारे सारे - दुःख भक्तों दे काटे सारे।

राक्षस मारे अहिल्या तारी - पवित्र धरती कीती सारी।

'लालचन्द' ना करो दलगीर, भक्ति दान देओ रघुबीर।

!! जय श्री कृष्ण !!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

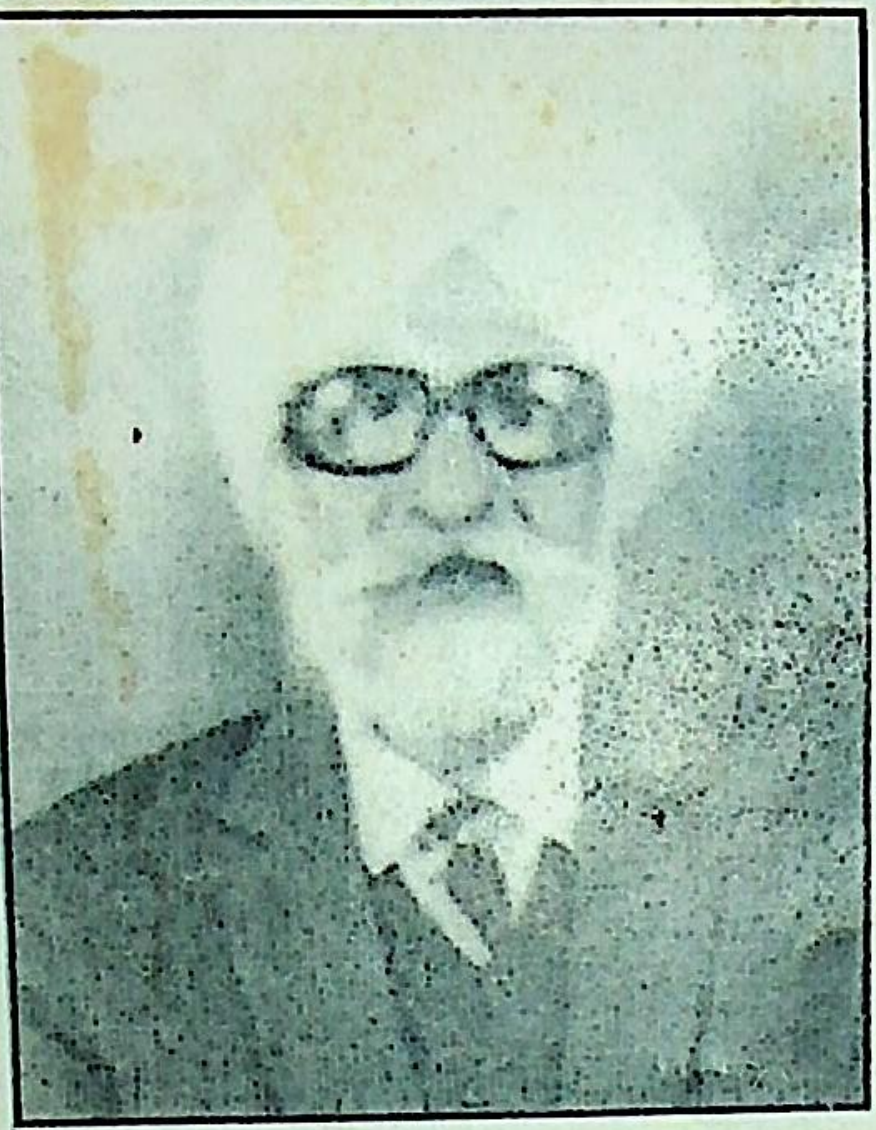

पूज्नीय श्री सिरी भगवान शर्मा

सेवा निवृत प्राध्यापक

5 जून 1936 – 20 अगस्त 2007

स्थान : गांव महराज, जिला बठिंडा (पंजाब)

—: विनम्र सेवा :—

हरीश कुमार शर्मा (सुपुत्र)
दुर्गा कालोनी,
नारायणगढ़ (अम्बाला)
दूरभाष : 01734 – 285647,
09416461779